# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये — श्री शत्रुंजय-मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

## सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

### ◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

६

शहर नोवेंबर - 2021

विद्यार्थी का नाम

**प्रश्न-१ रिक्त स्थान**

| | |
|---|---|
| (१) | निर्वेद |
| (२) | पारांचित |
| (३) | ज्ञानोपयोग |
| (४) | पवन |
| (५) | चंडी |
| (६) | तीन दिन |
| (७) | अनुष्ठान |
| (८) | शांतिनाथ |
| (९) | गर्भज मनुष्य |
| (१०) | शुक्ल ध्यान |
| (११) | चित्त की शुद्धि |
| (१२) | नलीनी गुल्म |
| (१३) | श्री ब्रम्हलोक |
| (१४) | जघन्य |
| (१५) | सवितर्क |
| (१६) | श्री पादलिप्त सूरि |
| (१७) | नामोच्चारण |
| (१८) | भाव |
| (१९) | स्त्रीसत्ती प्राप |
| (२०) | वनस्पतिकाय |

**प्रश्न-२ एक ही शब्द में**

| | |
|---|---|
| (१) | असंग |
| (२) | जगत |
| (३) | पर्यकासन |
| (४) | स्थिति |
| (५) | सरसव विद्या |
| (६) | नासिका |
| (७) | साले - बहनोई |
| (८) | सर्व इन्द्रियाँ |
| (९) | अननुष्ठान |
| (१०) | श्री आदेश्वर तीर्थंकर को |
| (११) | अंतर्मुहूर्त |
| (१२) | गोष्ठी |
| (१३) | कर्मसत्ता |
| (१४) | निर्वेद |
| (१५) | वृद्ध वादी सूरि |
| (१६) | स्कंध / स्कंध |
| (१७) | अधिक |
| (१८) | खींचकर |
| (१९) | बुलवानी चाहिये |
| (२०) | तेंतीस |
| (२१) | नाश किया है जिसने |
| (२२) | मुझे |
| (२३) | पाँच |
| (२४) | पल्योपम |
| (२५) | बुद्धि वाला |
| (२६) | जिनको |
| (२७) | पद को |
| (२८) | दो |
| (२९) | उपयोग |
| (३०) | जघन्य |

**प्रश्न-३ शब्दार्थ**

| | |
|---|---|
| (१) | थोडे कर्म वाला / हलुकर्मी |
| (२) | स्थितीवाला |
| (३) | उपद्रव |
| (४) | स्वर्ग |

**प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) | ૬ | (६) | ૧ |
| (२) | ૯ | (७) | 3 |
| (३) | ૧૦ | (८) | ૨ |
| (४) | ૪ | (९) | ૫ |
| (५) | ૮ | (१०) | ૭ |

**प्रश्न-५ संख्या में जवाब**

| | |
|---|---|
| (१) | ૧૨૮ |
| (२) | ૮૪ |
| (३) | ૧૫ |
| (४) | ૪ |
| (५) | ૩૧ |
| (६) | ૬ |
| (७) | ૧૪ |
| (८) | ૩ |
| (९) | ૧૨ |
| (१०) | ૧૧ |

| | प्रश्न-६ ✓ या × | | प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर |
|---|---|---|---|
| (१) | × | (१) | ૧૮ |
| (२) | ✓ | (२) | ૮ |
| (३) | ✓ | (३) | ૧૫ |
| (४) | × | (४) | ૫ |
| (५) | × | (५) | ૨૦ |
| (६) | × | (६) | ૧૦ |
| (७) | ✓ | (७) | ૧૫ |
| (८) | ✓ | (८) | ૭ |
| (९) | ✓ | (९) | ૧૪ |
| (१०) | × | (१०) | ૯ |

| प्रश्न-१ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | = | कुल गुण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | | | |

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. मेरी दृष्टी से शासन प्रभावना के 2 दृष्टांत है। (A) अवंति सुकुमार के याद में बना हुआ अवंति पार्श्वनाथ का तीर्थ, जिसपर विप्रों ने शिवलिंग की स्थापना कर दी, किंतु सिद्धसेन ने उस तीर्थ को वापस लाकर शासन प्रभावना करी। (B) श्रीमानतुंगाचार्य ने जंजीर-बेडी से जकडे जाने के बाद प्रभु आदेश्वर की प्रार्थना कर उनको हृदय में स्थापित किया और अपनी कवित्व शक्ती से भक्तामर की ४४ गाथाओं से ४४ जंजीर-बेडी-ताले तोडकर शासन की प्रभावना की।

२. प्रभु शांतिनाथ का प्रभाव बतलाते हुए बृहदशांती के द्वितीय गाथा में कहा है- जिसके घर में प्रभू की पूजा होती है, वहा सदा शांति का वास होता है। और तिसरी गाथा में कहा है कि प्रभू का नामोच्चार जय पाता है। भगवंत के नामोच्चार से उपद्रव, ग्रहों की कुदृष्टि, दुःस्वप्न, दुर्गति, दुष्ट अंगस्फुरण तथा दुष्ट निमित्त का नाश होता है। यह नामोच्चार आत्महित कराने वाला और संपत्ती को प्राप्त कराने वाला है। यह है प्रभु शांतिनाथ का प्रभाव।

३. उपादेय अनुष्ठानों में से एक है अमृतानुष्ठान। यह अनुष्ठान आराधने योग्य है। जिस तरह अमृत अत्यंत शुद्ध, सात्विक और पूज्य होता है, बिलकूल उसी तरह इस अनुष्ठान की क्रियाएँ भी शुद्ध, विधिपूर्वक, अत्यंत अप्रमत्त दशा में, चित्त की संपूर्ण शुद्धी पूर्वक और अत्यंत संवेग विराग से भरपूर होती है। इसीलिए तो अमृतानुष्ठान सद् अनुष्ठान अर्थात उपादेय अर्थात आराधने योग्य है।

४. श्वासोश्वास जीवन के प्राण है, अतः उसका नियमन, जिसे प्राणायाम कहते है, आध्यात्मिक विश्व में विशिष्ट स्थान रखता है। पूरक, रेचक, कुंभक यह प्राणायाम के भाग है, पवन को जितने से मनको जिता जाता है, क्योंकि प्राणायाम से चित्त एकाग्र होता है। किंतु क्षपकश्रेणी वाले साधक को केवलज्ञान प्राप्ती में नियम से भाव की ही मुख्यता है, और प्राणायाम आडंबर मात्र है।

५. नारकी के गति में जीव को नौ (9) उपयोग होते है, जो इस प्रकार है-
- (A) चक्षुदर्शन (2) अचक्षुदर्शन (3) अवधिदर्शन - यह तीन द्वार दर्शन संबंधी है।
- (B) मतिज्ञान (2) श्रुतज्ञान (3) अवधिज्ञान - यह 3 द्वार ज्ञान संबंधी है।
- (C) मतिअज्ञान (2) श्रुतअज्ञान (3) विभंगअज्ञान - यह 3 द्वार अज्ञान संबंधी है।

अतः ज्ञान के 6 और दर्शन के 3 इस प्रकार से नारकी का जीव